नेल्सन मंडेला

जिन्नी, चित्र : माइक, हिंदी : विदूषक

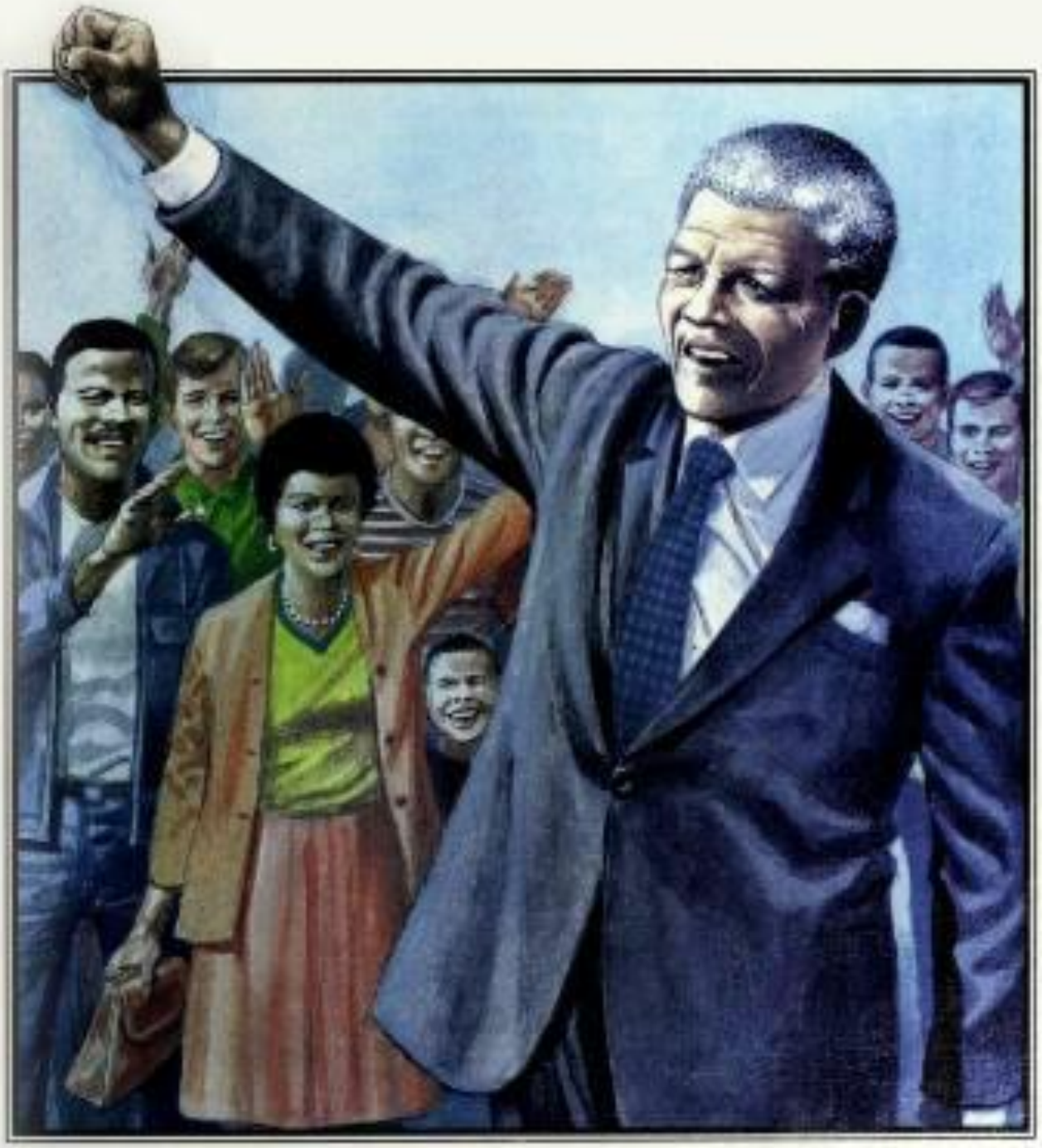

नेल्सन मंडेला

जिन्नी, चित्र : माइक, हिंदी : विदूषक

1994 में नेल्सन मंडेला, दक्षिण-अफ्रीका के राष्ट्रपति बने. उससे पहले उन्होंने अपने देश और लोगों की आज़ादी के लिए अनेकों वर्ष संघर्ष किया. उनके पिता थेम्बू जनजाति के सरगना थे, और उनके पुरखे पूरी थेम्बू जनजाति के राजा थे. मंडेला के जन्म से पहले ही, गोरे दक्षिण अफ्रीकियों ने, वहां के आदिवासी राजाओं को हटाकर खुद दक्षिण-अफ्रीका पर कब्ज़ा कर लिया था.

गोरों ने सबसे अच्छी ज़मीन खुद हड़प ली थी. इससे स्थानीय अफ़्रीकी बेहद गरीब हो गए. गोरे ही सारे नियम-कानून बनाते थे. गोरों द्वारा बनाए नियम-कानूनों से अश्वेत अफ्रीकिओं के लिए जिंदा रहना बिल्कुल मुश्किल हो गया था. इससे पहले कि मंडेला दक्षिण-अफ्रीका को मुक्त कराते और उसे सभी लोगों के रहने के लिए एक न्यायोचित देश बनाते उन्हें तीस साल जेल में गुज़ारने पड़े.

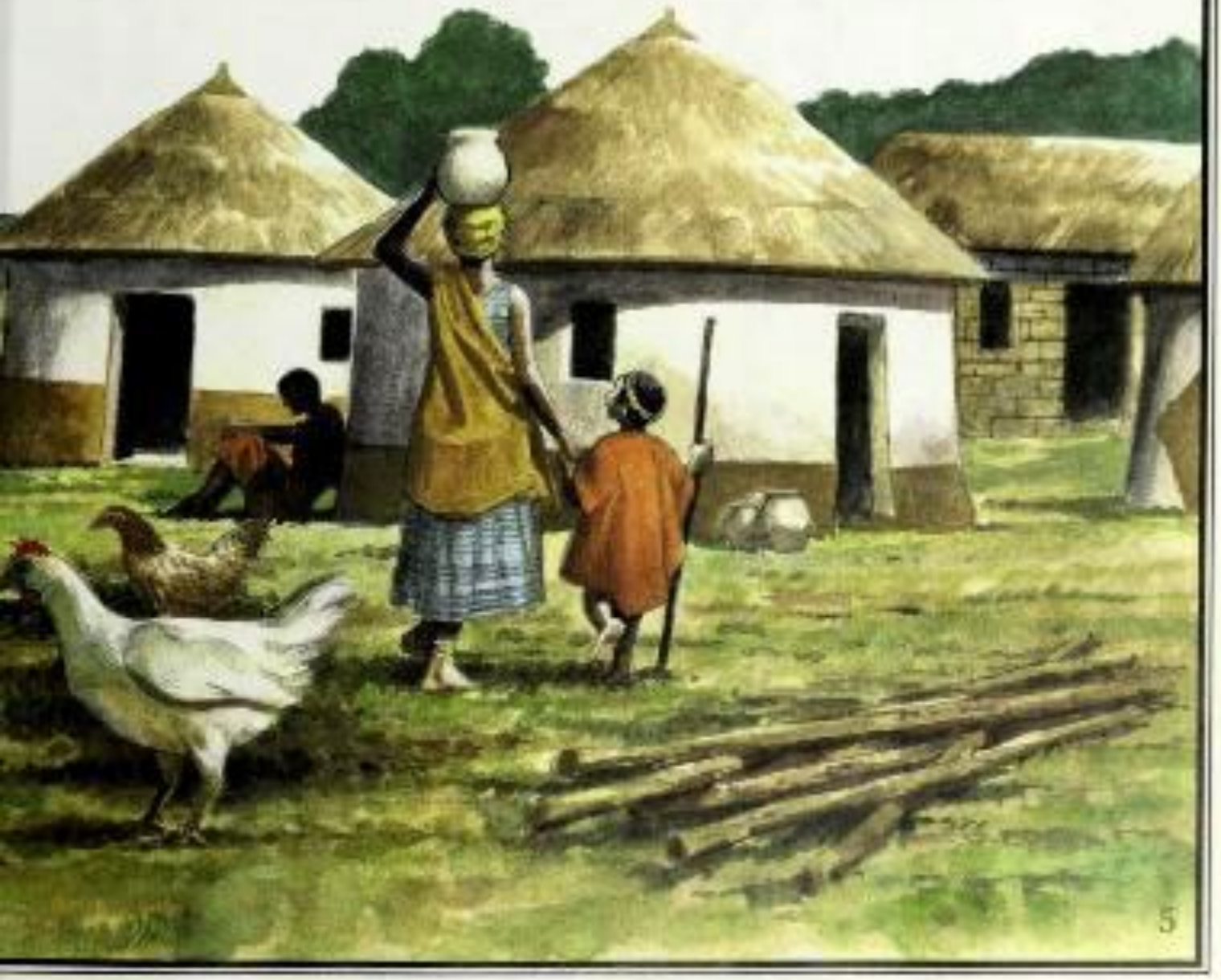

बचपन में रात को नेल्सन मंडेला एक-कमरे वाली, गोल झोपड़ी में सोते थे. वो अपने माता-पिता और तीन बहनों के साथ सोते थे. हरेक के सोने के लिए अलग चटाई होती थी. उनकी माँ के पास अपने परिवार के लिए तीन परंपरागत झोपड़ियाँ थीं. एक झोपड़ी सोने के लिए, दूसरी खाना पकाने के लिए और तीसरी अनाज रखने के लिए. जनजाति की अन्य शादीशुदा महिलायों की तरह ही माँ के पास पशुओं को रखने का एक बाड़ा भी था जहाँ वे अपनी दुधारू गाए रखती थीं. उन्होंने झोपड़ियों के पास एक बगीचा भी लगाया था. वहां वो अपने परिवार के लिए सब्जियां उगाती थीं.

उनकी जनजाति का प्रमुख भोजन एक प्रकार का मक्का था. नेल्सन की माँ मक्के को पीसकर आटा बनाती थीं. फिर वो चूल्हे पर मक्के की रोटियां पकाती थीं. मक्का पीसने में नेल्सन की बहनें, माँ की मदद करती थीं. नेल्सन घर के जानवरों और बकरियों को चराने ले जाता था.

कभी-कभी नेल्सन अपने दोस्तों के साथ शिकार पर जाता था. अगर वो किसी चिड़िया का शिकार करते तब वे तुरंत उसके पंख उखाड़कर उसे पकाकर खा जाते थे. नेल्सन एक सुखद ज़िन्दगी बसर कर रहा था. पर जब वो दस साल का हुआ तब अचानक उसके पिता का देहांत हो गया.

उसके बाद नेल्सन अपने चचेरे भाई चीफ जोंगिन्ताबा और उनके परिवार के साथ रहने चला गया. चीफ ने नेल्सन का अच्छा ख्याल रखने और उसे स्कूल भेजने का वादा किया.

पर नेल्सन ने ज़िन्दगी के सबसे महत्वपूर्ण सबक स्कूल में नहीं सीखे. उस ज़माने में युवा लोग, बड़ों की बातों को बहुत ध्यान से सुनते थे. थेम्बू राज्य के बहुत से लोग सरगना चीफ जोंगिन्ताबा से मिलने के लिए आते थे.

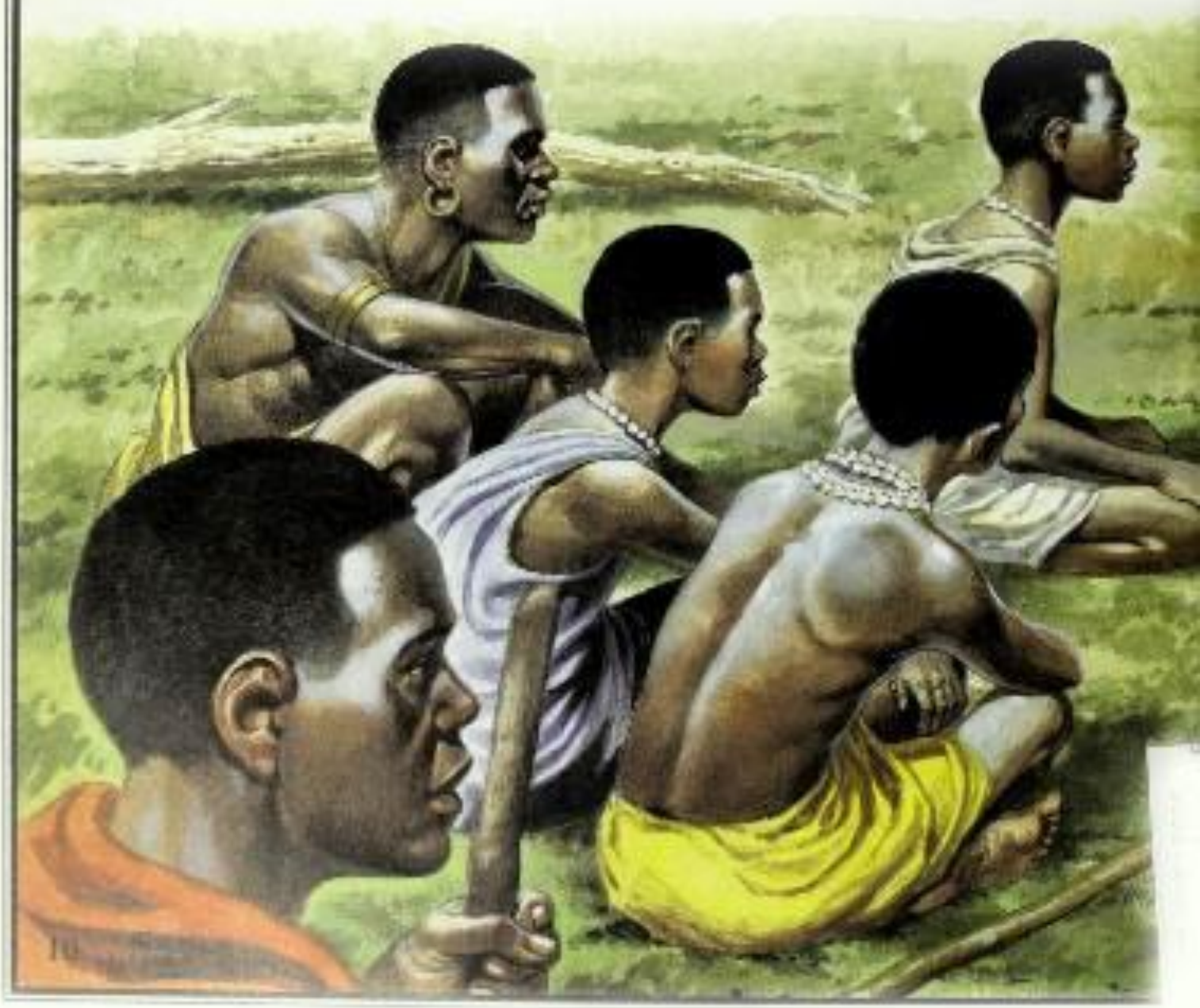

उनमें एक सरगना थे चीफ ज्वेलभानगिले जोई. उन्होंने चीफ जोंगिन्ताबा को बताया कि कैसे थेम्बू राजा, एक-दूसरे के साथ लड़े और अंग्रेजों के साथ भी लड़े. नेल्सन ने उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनीं. फिर उसे समझ में आया कि थेम्बू जनजाति के पास अब ज़मीन क्यों नहीं थी. थेम्बू लोग अब जितने गरीब थे, वे उतने गरीब पहले कभी नहीं थे. नेल्सन को समझ में आया कि अगर उसे अपने लोगों का जीवन स्तर सुधारना है तो उसे उसके लिए बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ेगा.

1941 में नेल्सन जोहानसबर्ग गया. वो दक्षिण-अफ्रीका का सबसे बड़ा शहर था. वहां उसे सोने की खदान में एक पुलिसकर्मी की नौकरी मिली. पहली बार नेल्सन ने अपनी जनजाति के बाहर की ज़िन्दगी का अनुभव किया. गोरों की सरकार ने अनुसार अलग-अलग नस्लों को अलग-अलग स्थानों पर रहना चाहिए था. गोरे रंगभेद को बढ़ावा देते थे. शहरों में ज़्यादातर गोरे, बड़े, आलीशान घरों में, और सिर्फ सिर्फ गोरों के इलाकों में ही रहते थे. उनके नौकर-चाकर हमेशा अश्वेत अफ्रीकी होते थे.

अश्वेत लोगों को शहरों के रहने और काम करने के लिए विशेष परमिट लेने पड़ते थे. वहां पर अश्वेत लोग, सिर्फ अश्वेत बस्तियों में ही रह सकते थे. उनकी बस्तियां अक्सर बंजर और सूखे इलाकों में होती थीं जहाँ पर किसी भी खाने की चीज़ को उगाना बहुत मुश्किल होता था. उनकी बस्तियों में नल, पानी, बिजली और टेलीफोन नहीं होते थे. अश्वेतों को वोट और ज़मीन खरीदने का अधिकार भी नहीं था. गोरों ने अपने हितों की सुरक्षा के लिए इस तरह के ज़ालिम क़ानून बनाए थे. तब दक्षिण-अफ्रीका में, 6-7 अश्वेतों के पीछे सिर्फ एक गोरा व्यक्ति ही था.

शहरों के बाहर तो नौकरियों की और भी किल्लत थी. जिन अश्वेतों के पास काम का परमिट होता उन्हें सूरज ढलने से पहले शहर को छोड़ना पड़ता था. उन्हें ट्रेन्स और बसों में लम्बी यात्रा करके अपनी-अपनी बस्तियों में वापिस पहुंचना पड़ता था. उन्हें अगले दिन सूरज निकलने से पहले ही उठकर दुबारा काम पर जाना पड़ता था. अश्वेत मजदूरों को बहुत कम वेतन मिलता था और उनमें से ज़्यादातर अपना पेट तक नहीं भर पाते थे.

बाद में नेल्सन मंडेला, यूनिवर्सिटी ऑफ़ विटवाटर्सरैंड में पढ़ने गए. वहां उन्होंने सब नस्लों के छात्रों को एक-साथ पढ़ते हुए देखा. वे छात्र, दक्षिण-अफ्रीका को एक नए तरीके से चलाने के बारे में चर्चा करते थे. ज़्यादातर गोरों का मत था कि गोरों को ही दक्षिण अफ्रीका की सरकार चलानी चाहिए. पर बहुत से छात्र और अन्य लोग चाहते थे कि दक्षिण-अफ्रीका में रहने वाली सभी नस्लों, भाषाओँ और जनजातियों को सामान अधिकार मिलें.

नेल्सन मंडेला ने प्रण किया कि वे दक्षिण-अफ्रीका के लोगों को न्याय दिलाने में अपनी सारी ज़िन्दगी लगायेंगे.

1944 में, मात्र छब्बीस साल की उम्र में वो अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (ANC) में शामिल हो गए. तभी उन्होंने अपने पहली पत्नी इवेलिन से शादी भी की.

1947 तक उन्हें ANC की यूथ लीग का सचिव नियुक्त किया गया. 1951 में ANC ने एक हड़ताल का नेतृत्व किया. बहुत से अफ्रीकी और भारतीय मूल के लोगों ने – जिनके साथ गोरों ने अन्याय किया था, उन्होंने काम करने से इंकार किया.

फिर 1951 में, मंडेला ANC की यूथ लीग के अध्यक्ष बने. जब उन्होंने अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ आवाज़ उठाई और धरना दिया तब मंडेला समेत बीस और लोगों को गिरफ्तार किया गया. पर क्योंकि उन्होंने कोई हिंसा नहीं की थी इसलिए दक्षिण-अफ्रीका की पुलिस को उन्हें मजबूरन छोड़ना पड़ा.

उसके बाद से आम लोगों ने, गोरों के अन्यायपूर्ण कानूनों का सख्त विरोध करना शुरू किया. उन मोर्चों में गोरे और अश्वेत दोनों मारे गए. उसके बाद से सरकार ने मंडेला का मुंह पूरी तरह बंद कर दिया. ऐसा लगने लगा जैसे मंडेला और ANC लड़ाई में हार गए हों.

पर मंडेला ने अपना संघर्ष ज़ारी रखा. उन्होंने समान-हकों का अपना आन्दोलन ज़ारी रखा और वो दुबारा गिरफ्तार हुए. 1956 में, 155 लोगों समेत उनपर राज-द्रोह का आरोप लगा. राज-द्रोह का मतलब होता है सरकार की खिलाफत करना – उसका तख्ता पलटना. मंडेला समेत 29 लोगों को मृत्युदंड सुनाया गया. पर जज ने उन्हें निर्दोष पाया. उसके बाद सभी 156 दोषियों को रिहा कर दिया गया.

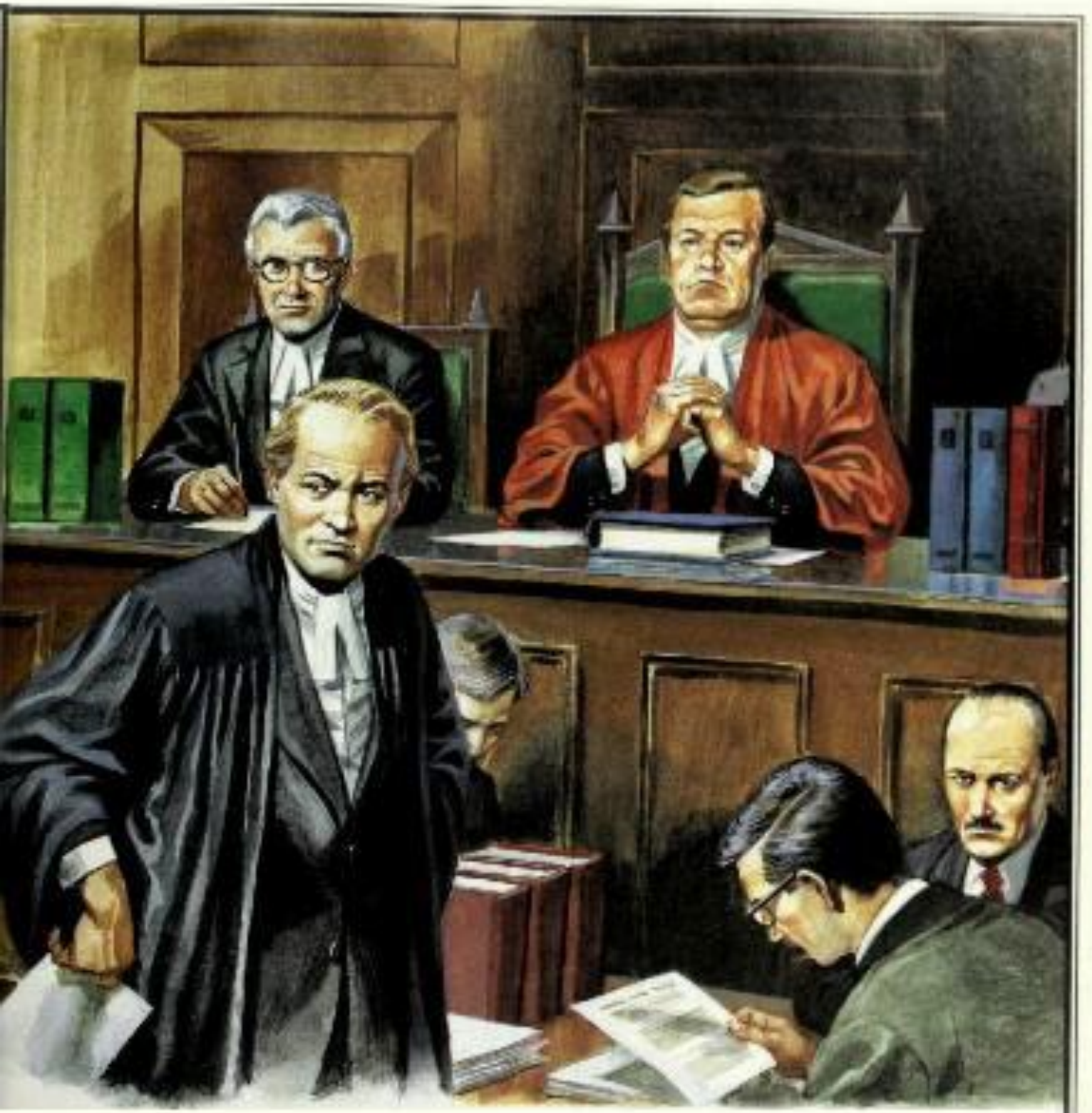

नेल्सन की इवेलिन के साथ शादी टूट गई. 1958 में नेल्सन ने विन्नी मदिकिज़ेला से विवाह किया. विन्नी ने दक्षिण-अफ्रीका की मुक्ति की लड़ाई में नेल्सन मंडेला के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर काम किया.

1960 में एक भयानक घटना घटी. शार्पविल्ले नाम के शहर में लोग, अन्यायपूर्ण कानूनों के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे. तभी पुलिस ने उनपर गोली चलाना शुरू कर दी.

उस गोलीबारी में 69 लोग शहीद हुए. 180 से ज्यादा आदमी, औरतें और बच्चे घायल हुए.

उसके बाद से दक्षिण-अफ्रीका की सरकार ने ANC पर पाबन्दी लगा दी. इससे ANC का सदस्य होना गैर-कानूनी हो गया. नेल्सन मंडेला को जेल में डाल दिया गया. सरकार नेल्सन मंडेला को, शार्पविल्ले के आन्दोलन को समर्थन देने के लिए सजा दे रही थी. जब मंडेला को जेल से रिहा किया गया तब उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर एक नया संगठन बनाया. उन्होंने रंगभेद के विरोध में सरकारी इमारतों को उड़ाया. कोई मरे नहीं इस बात का उन्होंने पूरा ध्यान रखा. पर अब उनका आन्दोलन शांतिपूर्ण नहीं रहा था.

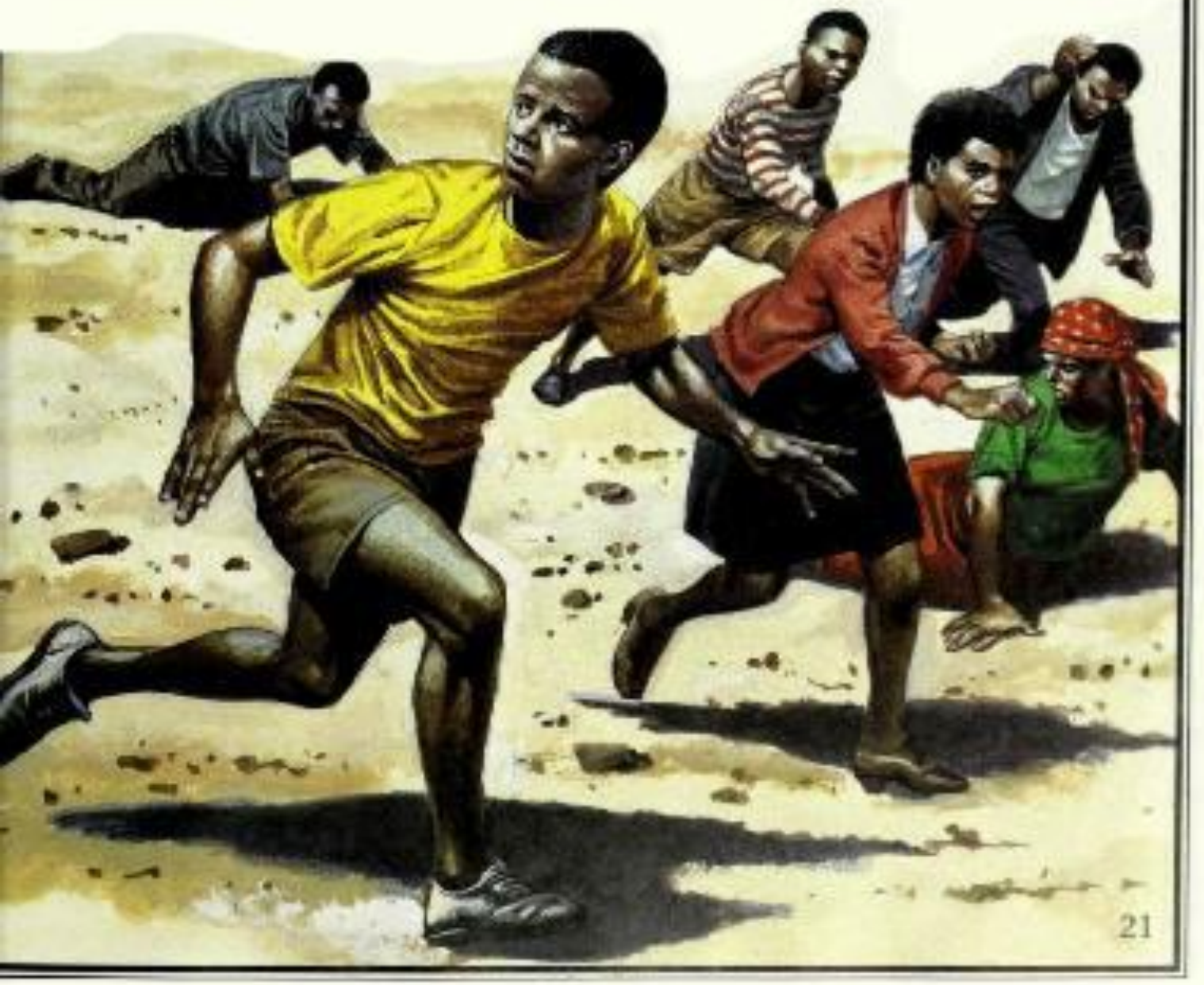

मंडेला, पुलिस से बचते रहे. वो वेश बदलकर टैक्सी चलाते रहे. पर 1962 में उन्हें फिर गिरफ्तार किया गया. इस बार उन्हें प्रीटोरिया जेल में पांच साल की कड़ी सजा सुनाई गई. जब वो जेल में बंद थे तब उन्हें दुबारा कोर्ट-कचेहरी ले जाया गया जहाँ पर उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई.

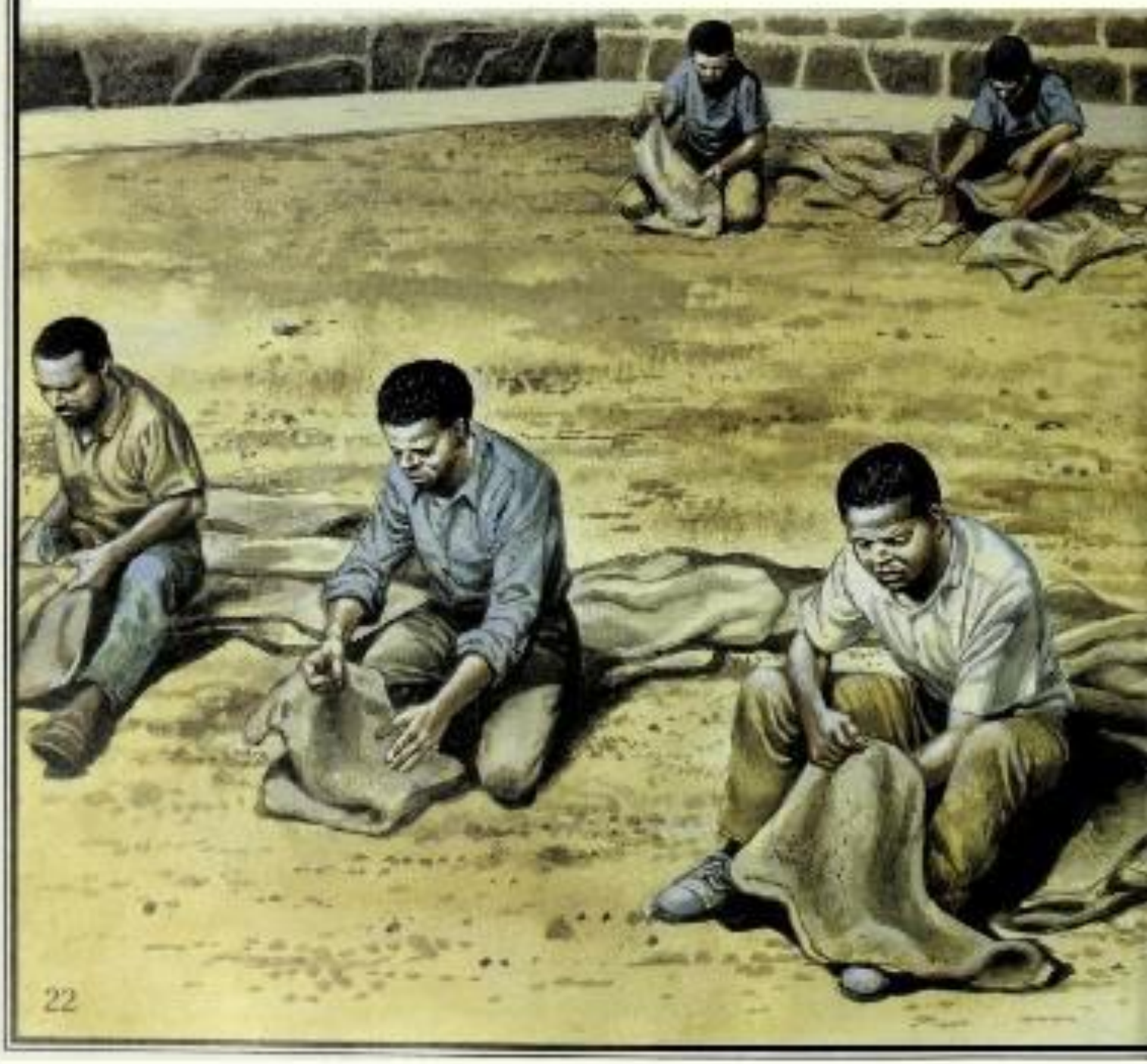

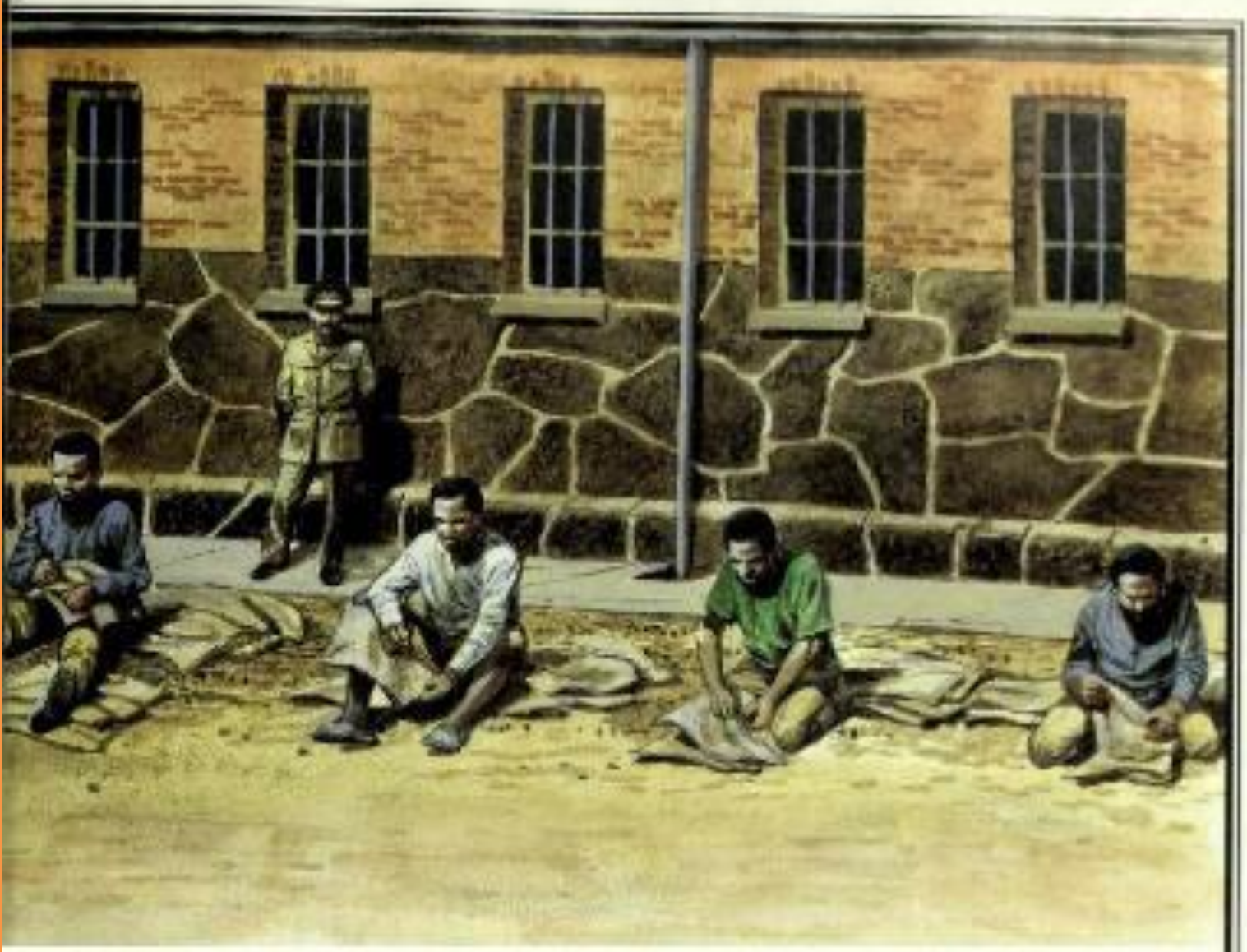

13 जून 1964 को, मंडेला को रोब्बेन आइलैंड जेल में भेजा गया. वहां पर सिपाहियों ने मंडेला से खुद के लिए जेल कोठरी बनवाई. शुरू में मंडेला और अन्य राजनैतिक बंदियों को मजबूरन दिन-रात अपनी कोठरियों में ही बंद रहना पड़ता था. पर अंत में उन्हें बाहर जाने की अनुमति मिली. बाहर जाकर उन्हें डाक के बोरे सिलने पड़ते थे. अगर किसी कैदी को किसी दूसरे से बात करते हुए पाया जाता तो उस दिन उसे भूखा रहना पड़ता था.

जब नेल्सन मंडेला जेल में थे जब अश्वेत, दक्षिण-अफ्रीकियों ने, लगातार रंगभेद के खिलाफ आन्दोलन और प्रदर्शन किए. उसके लिए बहुत हिम्मत चाहिए थी. उन आंदोलनों में कई लोग मारे गए और बाकी जेल भेजे गए. पूरी दुनिया ने मंडेला को जेल में रखने पर अपनी नाखुशी ज़ाहिर की. बहुत से देशों के लोगों ने मंडेला की रिहाई का प्रयास किया. वे लोग दक्षिण-अफ्रीका को रंगभेद के श्राप से भी मुक्त कराना चाहते थे. इसलिए प्रगितिशील देशों ने दक्षिण-अफ्रीका की सरकार पर बदलाव के लिए दबाव डाला.

दक्षिण-अफ्रीका को ओलिंपिक खेलों में भाग लेने से रोका गया. 1986 में अमरीकी सरकार ने, एक कानून पारित करके दक्षिण-अफ्रीकी एयरलाइन्स के जहाजों के, अमरीका में उतरने पर पाबंदी लगाई. उस कानून के तहत अमरीका ने दक्षिण-अफ्रीका से माल खरीदना भी बंद कर दिया.

मंडेला के 70वें जन्मदिन पर एक बहुत बड़ा संगीत का जलसा आयोजित किया गया. उस कार्यक्रम को, दुनिया के तमाम टेलीविज़न चैनल्स पर दिखाया गया. अब दक्षिण-अफ्रीका की गोरी सरकार, दुनिया के जनमत को नज़रंदाज़ नहीं कर सकती थी.

1989 में एफ. ई. डब्लू. डी क्लर्क दक्षिण-अफ्रीका के राष्ट्रपति चुने गए. उन्होंने दक्षिण-अफ्रीका को सभी लोगों के लिए एक बेहतर जगह बनाने का काम शुरू किया. फिर एक दिन राष्ट्रपति ने भरी सभा में घोषणा की कि मंडेला को जेल से रिहा कर दिया जायेगा.

11 फरवरी, 1990 को नेल्सन मंडेला जेल से बाहर आए. अब वो 71 वर्ष के थे. उन्होंने 10,000 दिन जेल में बिताए थे.

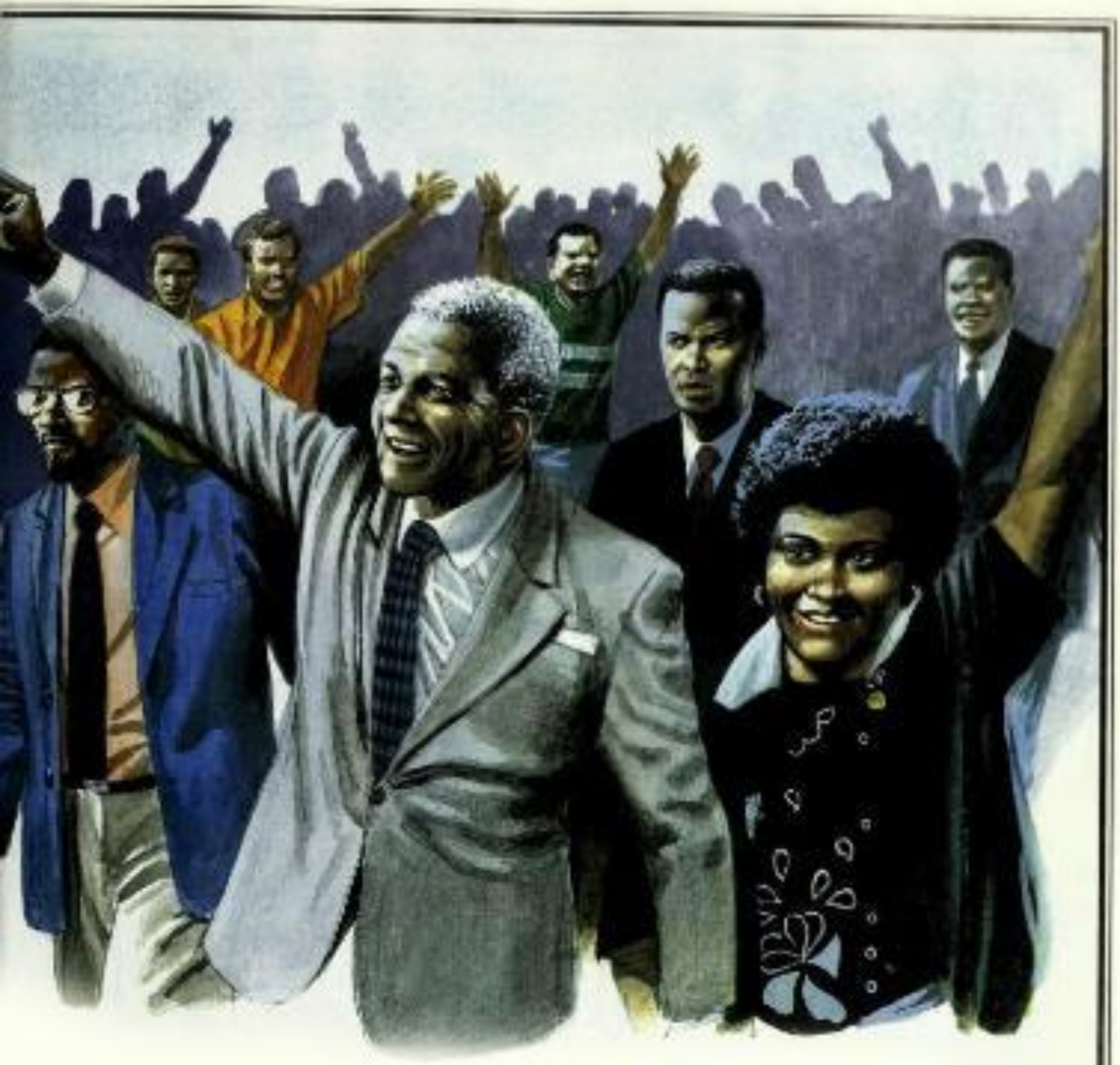

जेल के बाहर नेल्सन मंडेला की भेंट अपनी पत्नी विन्नी से हुई. उस पूरे दौर में वो अपने पति के साथ अडिग खड़ी रहीं. पूरी दुनिया के लोग मंडेला की रिहाई से खुश हुए. मंडेला की रिहाई का मतलब था कि दक्षिण अफ्रीका की सरकार अब रंगभेद जैसे अन्यायपूर्ण कानूनों को रद्द करने के लिए तैयार थी. मंडेला की रिहाई के बाद लोग ख़ुशी से सड़कों पर नाचने लगे.

एफ. ई. डब्लू. डी क्लर्क ने मंडेला और ANC के साथ मिलकर काम किया. उन्होंने मिलकर नई सरकार के लिए मुक्त चुनाव की व्यवस्था की. 1994 में, नेल्सन मंडेला राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव में उतरे. उन्हें वोट देने के लिए लाखों अश्वेत लोग लम्बी लाईनों में घंटों धूप में खड़े रहे. यह अश्वेत लोग अपने जीवन में पहली बार वोट कर रहे थे. मंडेला उस इलेक्शन में विजयी हुए और प्रेसिडेंट चुने गए. एफ. ई. डब्लू. डी क्लर्क डिप्टी-प्रेसिडेंट चुने गए.

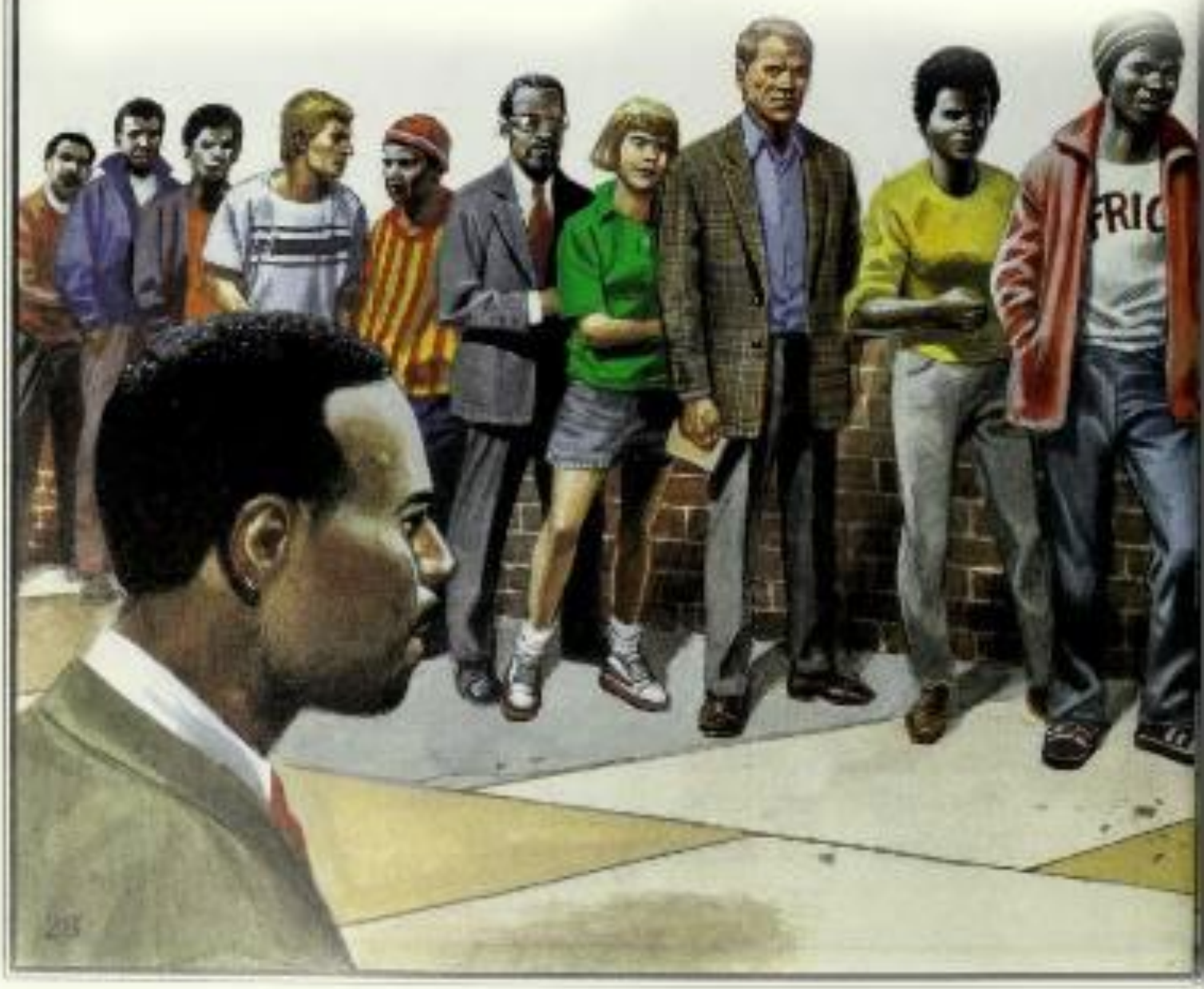

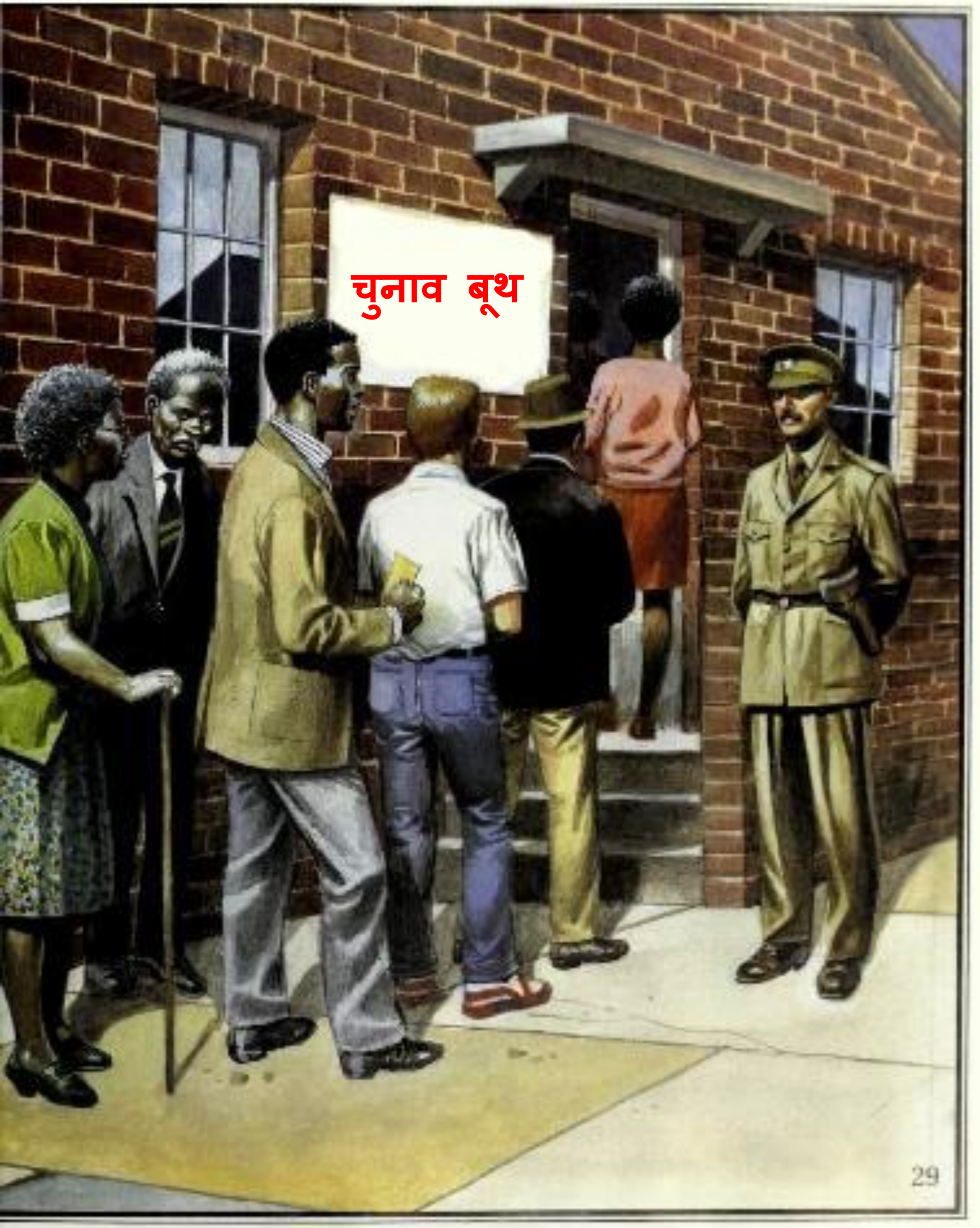
चुनाव बूथ

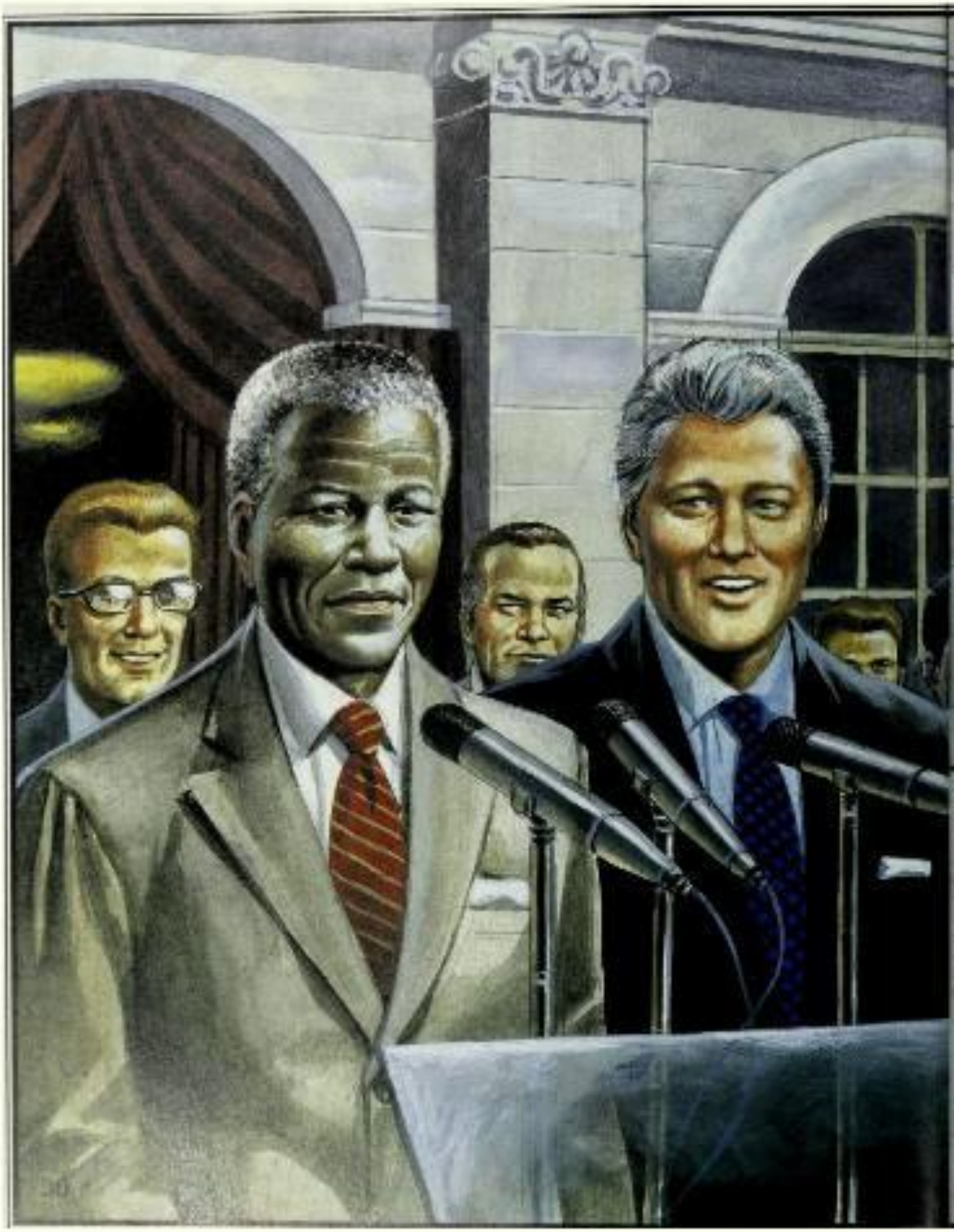

अब प्रेसिडेंट मंडेला दुनिया का दौरा करते हैं और अमरीका के प्रेसिडेंट क्लिंटन जैसे लोगों से मिलते हैं. वो अपने लोगों के लिए – चाहें वे गोरे हों या काले, शांतिपूर्ण तरीके से काम करते हैं. वो सभी दक्षिण-अफ्रीका के नागरिकों की ज़िन्दगी के बेहतर बनाना चाहते हैं. अब दक्षिण अफ्रीका में हरेक को वोट का अधिकार है. हरेक दक्षिण-अफ्रीका के नागरिक को, कहीं भी घूमने का और ज़मीन-जायजाद खरीदने का अधिकार है. अब सभी रंग के लोग नौकरी कर सकते हैं और वहां उन्हें समान काम के लिए समान वेतन मिलता है. अब मंडेला और दक्षिण-अफ्रीका – दोनों मुक्त हैं.

मुख्य तारीखें

1918	ट्रांसकी, दक्षिण-अफ्रीका में जन्म
1942	यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ-अफ्रीका से, कानून की डिग्री प्राप्त की
1944	अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस (ANC) में शामिल हुए
1956	राज-द्रोह के लिए 155 अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार
1958	नोम्ज़मो विनिफ्रेड मादीकिज़ेला से विवाह
1960	21 मार्च को शार्पविल्ले में शांति से प्रदर्शन करने वालों पर गोलीबारी. ANC पर प्रतिबन्ध लगा. मंडेला और साथियों को जेल भेजा गया
1961	मंडेला ने नए संगठन की शुरुआत की जिसने सरकारी इमारतों पर बम्ब फेंके
1962	मंडेला को गिरफ़्तारी के बाद 5 साल की कैद
1964	आठ अन्य लोगों के साथ मंडेला को आजीवन कारावास की सजा
1990	27 साल जेल में बिताने के बाद अंत में रिहा
1991	ANC के अध्यक्ष नियुक्त